Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer - reviewed, Open Access & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in; Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol.5, Issue-III, Jan. 2020

# के०के० दत्त का इतिहासकार के रूप में उदय और इतिहास लेखन की प्रासंगिकता
## (Rise of K.K. Dutt as Historian and Relevance of Historiography)

**Dr. Anuj Kumar**
UGC-NET, Ph.D.,
Patna University, Bihar, India
**DOI:** https://doi.org/10.53724/jmsg/v5n3.05

**संक्षिप्त रूप –**

डॉ० कालिकिंकर दत्त आधुनिक भारत के विश्वविख्यात इतिहासकारों में स्थान रखते हैं और आज भी इनके ग्रन्थों का अध्ययन एवं उपयोग विद्यार्थियों एवं शोधकर्त्ताओं द्वारा किया जा रहा है। इतिहास लेखन, पठन–पाठन, स्त्रोत संकलन आदि क्षेत्रों में बिहार में एक नये युग का सूत्रपात करने का श्रेय उन्हें दिया जा सकता है। बिहार की धरती पर इतिहास को लोकप्रिय बनाने में उनका अवदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और इसके अलावा आज भी इतिहास के उनके विद्यार्थीगण एक शिक्षक के रूप में अपने छात्रों के प्रति उनके सहृदय एवं उदार स्वैये को हमेशा स्मरण करते हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से डॉ० कालिकिंकर दत्त जी के इतिहासकार के रूप में उभरना एवं उनके इतिहास लेखन पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई है।

**शब्द कुंजी:** के०के० दत्त का जीवन परिचय, इतिहासकार के रूप में उनका उदय, उनके द्वारा किये गए इतिहास–लेखन।

कालिकिंकर दत्त का जन्म 5 मई, 1905 को संथाल परगना जिलान्तर्गत पाकुड़ सब–डिविजन के झिकरहट्टी ग्राम में एक निम्न मध्यमवर्गीय बंगाली कायस्थ परिवार में हुआ था। इन्हें प्यार से लोग काली बाबू के नाम से पुकारते थे। दत्त की प्रारंभिक शिक्षा उनके पिता श्री सदानन्द दत्त के निर्देशन में पाकुड़ और महेशपुर उच्च विद्यालय में पूरी हुई, जहाँ वे स्वयं प्रधानाचार्य के पद पर आसीन थे।[1] दत्त साहब की माता श्रीमती सरोजनी दत्त उनकी गहन अध्ययनशीनता एवं इमानदार व्यवहार की मुख्य प्रेरणास्त्रोत थी। बिहार में अन्य अप्रवासी बंगाली परिवार की तरह दत्त ने प्रारंभ से ही परंपरागत अंग्रेजी शिक्षा को महत्त्व दिया।

1921 में घटना विश्वविद्यालय से मैट्रिक पास करने के पश्चात् के०के० दत्त उच्च शिक्षा के लिए कलकत्ता रवाना हो गये। वहाँ उन्होंने के०एन० कॉलेज, ब्रह्मपुर में अपना दाखिला लिया। काली बाबू शुरू से ही वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेते रहे थे। वाद–विवाद में उनकी काफी दिलचस्पी थी। वाद–विवाद के कौशल के कारण जल्द ही उन्होंने कॉलेज में अपनी एक अलग पहचान कायम कर ली। इन्हीं उपलब्धियों के कारण उन्हें कॉलेज संगठन का सचिव भी बनाया गया।[2] इसके अलावे अनुशासन, व्यवहार कुशलता एवं मिलनसार प्रवृति के चलते उनके शिक्षक उनसे विशेष रूप से प्रभावित रहते थे। के०एन० कॉलेज से उन्होंने इतिहास (प्रतिष्ठा) विषय से बी०ए० प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। तत्पश्चात् उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से इतिहास विषय से स्नातकोत्तर की पढ़ाई वहाँ के मान्य शिक्षकों–त्रिपुरारी चक्रवर्ती, के० जकारिया, एच०सी० रायचौधरी, कालीदास नाग, आई०बी० बनर्जी,

सुशोभन सरकार एवं अन्य के सान्निध्य में प्रारंभ की। कैंपस से बाहर एक शिक्षक और थे जिनसे काली बाबू का विशेष रूप से लगाव था और वह थे आर०सी० मजुमदार। दत्त अपने पूरे जीवन इन योग्य शिक्षकों को आदर और स्नेह देते रहे।[3] इस तरह इन महान इतिहासकारों के निर्देशन और मार्गदर्शन में काली बाबू का इतिहास विषय के प्रति भी लगाव दिन–प्रतिदिन बढ़ता गया।

इतिहास विषय में दत्त ने एम०ए० प्रथम श्रेणी में दूसरा स्थान प्राप्त किया। इस अध्ययन काल में उनकी कुशाग्रता का चमत्कार था कि एक विषय के आधे भाग, अन्तर्राष्ट्रीय विधि में पचास अंक उन्हें मिले। यह अपने–आप में एक रिकॉर्ड बन गया। 1928 में उन्होंने पी–एच०डी० हेतु शोधकार्य डॉ० सुविमलचन्द्र सरकार के निर्देशन में प्रारंभ किया। इसके लिए उन्हें बिहार एवं उड़ीसा सरकार की शोधवृत्ति जो सौ रूपये मासिक थी, भी प्राप्त हुई।[4]

दत्त अपने छात्र जीवन से ही शोध कार्य के प्रति काफी जागरूक थे। उन्होंने इस दौरान 'स्टडीज इन दि हिस्ट्री ऑफ बंगाल सूबा (1740–1770)' नामक ग्रंथ अपने शोधकार्य द्वारा तैयार किया जिसके लिए 1930 में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें प्रेमचंद रायचंद्र छात्रवृत्ति भी प्रदान किया।[5] इन दो छात्रवृत्तियों के मिलने से उन्हें अपने पी–एच०डी० के शोध–कार्य में आर्थिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा। यद्यपि इस दौरान जुलाई 1930 में वह पटना कॉलेज में व्याख्याता के पद पर नियुक्त हुए, किन्तु उनका शोध–कार्य अनवरत जारी रहा। अपने शोध–कार्य के दौरान उन्हें अपने समकालीन विभिन्न शिक्षकों की मदद लेनी पड़ी। सैय्यद हसन अस्करी ने पर्सियन पांडुलिपि के अनुवाद में दत्त की खुब मदद की जो उनके शोध–कार्य में काफी सहायक सिद्ध हुआ।[6] अपने शुरूआती दौर में उन्हें अपने शोध–कार्य में कुछ कठिनाइयाँ हुई लेकिन कुशल निर्देशन, कठिन परिश्रम एवं अच्छी याददाश्त ने उनके इस कठिन कार्य को काफी सरल बना दिया। इतिहास के रिसर्च मेथोडोलॉजी पर दत्त की पकड़ बहुत अच्छी थी।

1937 में कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें पी–एच०डी० उपाधि से विभूषित किया। उनके शोध का विषय था– "अलीवर्दी एण्ड हिज टाइम्स"। अगले सात वर्षों में वे प्रोफेसर बन गये।

1950 के दशक तक काली बाबू अपनी कार्य कुशलता एवं शोध ग्रंथों के लेखन की बदौलत अपने छात्रों एवं सहकर्मियों के बीच काफी प्रसिद्ध हो चुके थे।[7] उनके सहकर्मियों में प्रोफेसर अस्करी और जे०एन० सरकार काफी महत्वपूर्ण थे। यद्यपि इनका संबंध प्रारंभिक दौर में गुरू–शिष्य का था किन्तु बाद के दिनों में ये एक दूसरे के सहकर्मी की भूमिका निभाने लगे। 1940–1950 के दशक में दत्त प्रत्येक दिन पटना कॉलेज के छात्रावास में भ्रमण के लिए जाते थे तथा वहाँ रहने वाले उनके छात्रों, मित्रों एवं सहकर्मियों के शोध से संबंधित सवालों का बड़े सलीके से जवाब देते तथा उन्हें शोध के नये–नये तरीके भी बताते थे।

अपने शिक्षण कार्य के प्रारंभिक दौर में दत्त 'इंडियन हिस्ट्री कॉंग्रेस, इंडियन हिस्टोरिकल रेकॉर्डस कमिशन, दि ऑल इंडिया ओरियण्टल कॉन्फ्रेंस' आदि राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं में सदस्य के रूप में जुड़े रहे तथा इन संस्थाओं की बैठकों में भी समय–समय पर भाग लेते रहे। वे एक अच्छे शोधार्थी के साथ–साथ एक अच्छा वक्ता भी थे। 1949 में नागपुर विश्वविद्यालय में उन्होंने भाषण भी दिया। 1950 में पेरिस में होने वाले नौवें इंटरनेशनल कॉंग्रेस ऑफ हिस्टोरिकल साइन्सेज में इन्हें आमंत्रित भी किया गया।[8] हालांकि वे विदेश यात्रा को ज्यादा पसंद नहीं करते

थे। 1950 के दशक से दत्त भारत के प्रमुख इतिहासकारों में अपनी जगह बना चुके थे। अपने शिक्षण कार्य के अलावे वे प्रत्येक दिन 10–11 घंटे तक अध्ययन में व्यतीत करते थे।

1958–60 तक इन्होंने पटना कॉलेज के प्रिंसिपल पद को भी सुशोभित किया, तत्पश्चात् 1960 में इन्हें बिहार सरकार के अधीन 'काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान' और 'बिहार राज्य अभिलेखागार' का निर्देशक आजीवन के लिए बनाया गया। 1962 में इन्हें बोध गया विश्वविद्यालय के सुदृढ़िकरण हेतु बुलाया गया जहाँ इन्होंने कुलपति के रूप में अपना अमूल्य योगदान देकर इस विश्वविद्यालय को विश्व परिदृश्य में लाया। बाद में पटना विश्वविद्यालय का कुलपति बनने का भी गौरव प्राप्त हुआ। इस पद पर वे 1971 तक कार्यरत रहे। 24 मार्च 1982 को पटना में इनका निधन हुआ।

एक इतिहासकार के रूप में कालिंकिंकर दत्त का अभ्युदय उस काल में हुआ था जिस काल में महात्मा गांधी के कुशल निर्देशन में राष्ट्रीय आन्दोलन अपने चरमोत्कर्ष पर था। भारत के बाहर सारी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घट रही थी जिनमें प्रथम विश्वयुद्ध, 1917 की रूसी क्रांति, अमेरिका का विश्व राजनीति में धमाकेदार प्रवेश, नाजीवाद एवं फासीवाद का उदय आदि। एक बुद्धिजीवी होने के नाते दत्त भी अपने परिस्थितियों एवं उसकी मांगों से प्रभावित थे। अतः राष्ट्रवादी चिन्तन की ओर उनका झुकाव स्वभाविक रूप से दिखाई पड़ा। अलीवर्दी खाँ का शासन काल बंगाल के इतिहास में काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। उसने अपने शासन काल में बंगाल में अंग्रेजों का सिक्का कभी जमने नहीं दिया। अपने जीवन के अंतिम समय तक वह अंग्रेजों से संघर्ष करता रहा। दत्त के इतिहास लेखन एवं शोध–कार्य का श्री गणेश अलीवर्दी और उसके शासन काल से प्रारंभ होता है। उन्हें पी–एच०डी० की उपाधि भी इसी विषय पर मिली थी। कहने का तात्पर्य यह है कि दत्त कहीं–न–कहीं राष्ट्रीयता की भावना से प्रभावित जरूर थे और यह उनके इतिहास लेखन में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक तथा क्षेत्रीय बदलाव के अनुरूप उनके इतिहास लेखन में भी बदलाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं।

दत्त ने अपने जीवन काल में अपनी लगभग 30 किताबें तथा 130 शोध–पत्र प्रकाशित किया। उन्होंने अपने शोध–प्रबंध के अलावे "स्टडिज इन दि हिस्ट्री ऑफ बंगाल सूबा।" (1740–1770) नामक शोध ग्रंथ तैयार किया जिसे कलकत्ता विश्वविद्यालय ने 1936 में प्रकाशित किया। इस पुस्तक की समीक्षा में प्रोफेसर इवन कॉट्टन तथा एच०जी० रॉलिसन ने लिखा है कि "यह ग्रंथ गुणवत्ता पूर्ण स्त्रोतों से ओत–प्रोत तथा वस्तुनिष्ठ अध्ययन का प्रतीक है।"[9]

दत्त के इतिहास लेखन की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे जिस माहौल में रहे अपनी लेखनी को उसी माहौल में ढाल दिया। 1930–50 के काल में उनका लेखन पूरी तरह से बंगाल के क्षेत्रीय इतिहास तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों पर केन्द्रित रहा। कुछ ग्रंथों को उन्होंने स्वतंत्र रूप से तैयार किया तथा कुछ ग्रंथों को अपने सहकर्मियों के साथ मिलकर तैयार किया। उनके शोध–प्रबंध को कलकत्ता विश्वविद्यालय ने 1939 में प्रकाशित किया। इसी तरह 'दि डच इन बंगाल एण्ड बिहार (1740–1825)' को पटना विश्वविद्यालय ने 1948 में प्रकाशित किया। 'इंडियाज मार्च टू फ्रीडम' तथा सुविमल चंद्र सरकार के साथ लिखित 'मॉडर्न इंडियन हिस्ट्री' नामक पुस्तकें अपने समय में राष्ट्रीय आंदोलन पर एक प्रामाणिक अध्ययन का आधार माना गया।

दत्त द्वारा लिखित एवं प्रकाशित ग्रंथों को चार भागों में बांटा जा सकता है। प्रथम भाग में टेक्सट बुक आता है। इसके अंतर्गत दो ग्रंथ सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। पहला 'मॉडर्न इंडियन हिस्ट्र' और दूसरा 'एन एडभान्स हिस्ट्री ऑफ इंडिया' जिसे उन्होंने आर०सी० मजुमदार और एच०सी० राय चौधरी के साथ मिलकर तैयार किया। इस किताब को तीन भागों में तैयार किया गया – प्राचीन, मध्यकाल तथा आधुनिक। इसका प्रकाशन भारत ही नहीं श्रीलंका के अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में हुआ। 'मॉडर्न इंडियन हिस्ट्री' जिसे इंडियन प्रेस, इलाहाबाद ने 1938 में छापा था, इस दिशा में उनकी पहली रचना है।

दत्त ने बंगाल ही नहीं बल्कि बिहार की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर भी अपने शोध के दौरान विशेष रूप से नजर रखा। बिहार सरकार के अधीन के०पी० जायसवाल रिसर्च इंस्टिच्यूट तथा बिहार राज्य अभिलेखागार के निर्देशक के रूप में उन्होंने बिहार सरकार द्वारा पोषित कई ग्रंथों का प्रकाशन और संपादन किया। इन ग्रंथों में सर्वप्रमुख है–के०के० दत्त (सम्पादित) 'स्पीच्स एण्ड राइटिंग्स ऑफ महात्मा गाँधी, रिलेटिंग टू बिहार (1917–1947)' 1960, गांधीजी इन बिहार, 1970, बायोग्राफी ऑफ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, 1970, हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार (तीन भाग में), 1957–58, सम फरमानाज एण्ड सनद्स (1957–1802), 1962, दि कम्प्रीहेंसिव हिस्ट्री ऑफ बिहार, खंड–III, भाग-I, II, के०पी० जायसवाल रिसर्च इंस्टिच्यूट, पटना, 1970 आदि। 'स्पीच्स एण्ड राइटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी', रिलेटिंग टू बिहार तथा 'गांधीजी इन बिहार', इन दो ग्रंथों के माध्यम से दत्त ने गाँधीजी के बिहार दौरे तथा बिहार से संबंधित उनके महत्वपूर्ण कामों को एक जगह दिखाने का बखूबी प्रयास किया है। यह ग्रंथ आज भी शोधार्थियों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। यह प्राथमिक स्त्रोतों पर आधारित अत्यंत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

लेखन के दौरान दत्त ने बिहार के महान विभूतियों के तरफ भी विशेष रूप से ध्यान दिया है। इस क्षेत्र में उन्होंने उन विभूतियों के जीवनी एवं कार्यों को अपने तरीके से सजाने का प्रयास किया है। इन ग्रंथों में 'बायोग्राफी ऑफ कुँअर सिंह एण्ड अमर सिंह' काफी महत्वपूर्ण है, जिसे बिहार सरकार ने 1957 में प्रकाशित किया। इसी तरह का एक और महत्वपूर्ण ग्रंथ "बायोग्राफी ऑफ डॉ० राजेन्द्र प्रसाद" है, जिसे बिहार सरकार ने 1970 में प्रकाशित किया। इनके अलावे जीवनी पर आधारित उनके अन्य ग्रंथ भी है जिनमें "सिराजुद्दौला", ओरिएन्ट लांगमैंस लिमिटेड, कलकत्ता, 1971, शाहआलम एण्ड इस्ट इंडिया कम्पनी, वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1965 काफी महत्वपूर्ण हैं।

एक निर्देशक के रूप में दत्त की एक और उपलब्धि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने बिहार राज्य अभिलेखागार में संचित अप्रकाशित सरकारी पत्रों का संपादन भी किया। इनमें सेलक्शन्स ऑफ दी जुडिशियल रिकॉर्ड्स ऑफ दि भागलपुर डिस्ट्रिक ऑफिस (1792–1805) गवर्नमेंट ऑफ बिहार, 1968, अनपब्लिश्ड जमीन्दारी रिकार्डस तथा सेलेक्शन्स फ्रॉम अनपब्लिश्ड कॉरेस्पॉन्डेन्स ऑफ द मैजिस्ट्रेट एण्ड जज ऑफ पटना आदि काफी महत्वपूर्ण है।

इतिहासकार के रूप में दत्त की अवधारणा यह थी कि बड़े–बड़े युद्धों तथा राज्यों की महान घटनाओं के अध्ययन को ही इतिहास का मुख्य विषय नहीं माना जाना चाहिए। केवल बड़े राजाओं तथा प्रशासकों का इतिहास लिखना ही इतिहास का प्रमुख कार्य नहीं है। समाज के साधारण जन–जीवन का इतिहास लिखना भी इतिहास का

प्रमुख अंग है क्योंकि साधारण मानवों का भी योगदान इतिहास के गतिक्रम में कम महत्व का नहीं होता। दत्त ने अपने इतिहास लेखन में इन सारी बातों का विशेष रूप से ख्याल रखा है। आजादी के बाद इतिहास लेखन में दो पक्षों पर विशेष रूप से जोर दिया गया। क्षेत्रीय इतिहास लेखन और समाज के निम्न, मध्यवर्गीय एवं कृषक समुदायों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का विवेचन। क्षेत्रीय इतिहास लेखन विशेषतः बंगाल एवं बिहार पर के०के० दत्त का योगदान सर्वाधिक उल्लेखनीय माना जा सकता है। क्षेत्रीय इतिहास लेखन को जीतना बढ़ावा दत्त ने दिया उतना बढ़ावा उनके किसी समकालीन इतिहासकार ने नहीं दिया है, ऐसा कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। बंगाल एवं बिहार ही नहीं बल्कि पूरे भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं पर उन्होंने विशेष रूप से ध्यान दिया।

सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास से संबंधित उनके कई ग्रंथ प्रकाशित हुए जिनमें प्रमुखतः 'रेनेसा, नेशनलिज्म एण्ड सोशल चेन्जेज इन मॉडर्न इंडिया', बुकलैण्ड लिमिटेड, कलकत्ता, 1965', 'ए सोशल हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडिया', मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया, कलकत्ता, 1975', 'लाइफ एण्ड थॉट ऑफ दि पिपुल ऑफ बिहार', साइंटिफिक बुक एजेन्सी, कलकत्ता, 1957 (बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी से प्रकाशित हिन्दी अनुवाद, 1970), 'एजुकेशनल एण्ड सोसल एमेलिओरेशन ऑफ वूमेन इन प्री–म्युटिनी इंडिया', लॉ प्रेस, पटना, 1936', 'ए सर्वे ऑफ सोशल लाइफ एण्ड इकोनॉमिक कन्डीशंस ऑफ इण्डिया इन दि एटीन्थ सेन्चुरी' (1707–1803), कलकत्ता, 1961 है।

दत्त द्वारा लिखित 'दि संथाल इनसरेक्शन ऑफ : 1855–57', कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1940' और 'अनरेस्ट अगेन्सट ब्रिटिश रूल इन बिहार' (1831–1859), गवर्नमेंट ऑफ बिहार, 1957 ऐसी रचना है जो क्षेत्रीय इतिहास लेखन के साथ–साथ उन आदिवासी आन्दोलनों को दर्शाता है जिसका योगदान राष्ट्रीय आन्दोलन में काफी महत्वपूर्ण माना जाता है।'

1857–58 के विद्रोह का स्वरूप इतिहासकारों में एक मतभेद का विषय माना जाता था और अधिकांशतः अंग्रेज इतिहासकारों ने इसको एक सैनिक असंतोष से उत्पन्न बलवा माना था। अपनी पुस्तक 'रिफ्लेक्शंस ऑन दि म्यूटिनी' कलकत्ता, विश्वविद्यालय, 1966 में दत्त के द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के दृष्टिकोण से इस विद्रोह के महत्व को समझने और यह बतलाने का प्रयास किया गया कि इस विद्रोह ने एक जन–साधारण के विद्रोह का रूप कहीं–कहीं अख्तियार कर लिया था।

एक इतिहासकार के रूप में दत्त की विलक्षणता इस कारण भी थी कि इन्होंने एक साथ इतिहास के विभिन्न अध्ययन क्षेत्राों में उल्लेखनीय योगदान दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास लेखन के साथ–साथ उन्होंने आधुनिक भारत के आर्थिक एवं सामाजिक इतिहास लेखन के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया।[10] दत्त ने अपने जीवन–काल में लगभग 130 शोध पत्र भी तैयार किए थे जो प्रकाशित भी हो चुके हैं। इन सब की सूची तत्काल देना आवश्यक प्रतीत नहीं होता है।

एक इतिहासकार के रूप में दत्त के योगदानों के स्थायी प्रभाव के पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारण ऐतिहासिक नियमावली के प्रति उनकी प्रतिबद्धता थी। ऐसा लगता है कि जर्मन इतिहासकार रांके के द्वारा इतिहास लेखन के क्षेत्र में किये गये क्रांतिकारी परिवर्तनों को दत्त ने पूरी तरह समझा और उन्हें इतिहास लेखन की कसौटी मानकर अपनाया। परिणामस्वरूप उन्होंने बहुत परिश्रम कर मौलिक स्त्रोतों का भण्डार एकत्रित किया और ऐसा उन्होंने

इतिहास लेखन के उन सभी क्षेत्रों में किया जिनसे एक इतिहासकार के रूप में वे जुड़े। साथ ही दत्त ने इतिहास अध्ययन को बहुत व्यापक रूप से देखा और हम ऐसा पाते हैं कि उनके इतिहास दर्शन पर 18वीं और 19वीं शताब्दी के प्रभावी विचारधाराओं का गहरा प्रभाव पड़ा। 19वीं शताब्दी को भारत के नवजागरण काल का आरंभ माना जाता है और इस शताब्दी के महत्वपूर्ण विचारों एवं अवधारणाओं से काली बाबू पूर्ण रूप से प्रभावित थे। बीसवीं शताब्दी में प्रबल ढंग से प्रवाहित राष्ट्रीयता की लहर का भी जोरदार असर उनपर था।[11]

## संदर्भ–स्त्रोत–


1. जे०एन० सरकार, "काली बाबू ऐज आई हैव नॉन हिम", जर्नल ऑफ दि बिहार रिसर्च सोसाइटी, खंड LIX, भाग I-IV, 1973 प्र० XXXIV.
2. वाइड दत्ताज ऑटोबायोग्राफी
3. जे० एन० सरकार, वही।
4. एस०एच० अस्करी, "काली बाबू, माई फ्रेंड–रिमिनीसेन्सेज", जे०बी०आर०एस०, 1973, पृ० XXVII
5. राजेन्द्र राम (संकलनकर्त्ता), डॉ० कालिकिंकर, दत्त, आधुनिक भारतीय इतिहास का ध्रुवतारा, जन्म शताब्दी स्मृति, जनजागरण प्रकाशन, पृ०–16।
6. के०के० दत्त, अलीवर्दी एण्ड हिज टाइम्स, कलकत्ता, 1939, (प्रीफेंस)।
7. बी०के० सिन्हा, "डॉ० के०के० दत्त एण्ड हिज राइटिंग्स" जे०बी०आर० एस०, 1973, पृ० II.
8. जे०एन० सरकार, वही, पृ०, XXIV; बी०के० सिन्हा, वही, पृ० XVII
9. उद्धत, राजेन्द्र राम (संकलनकर्त्ता), वही, पृ० 19।
10. 1857–58 के विद्रोह पर भारतीय इतिहास लेखन 2012 शोध प्रबंध डॉ मनोज कुमार पटना विश्वविद्यालय पटना। भारतीय इतिहास लेखन के विविध आयाम सेन्ट्रल हिन्दी डायरेक्टोरेट न्यू दिल्ली 2016 डॉ मनोज कुमार। – पृ०सं० 32–42
    सर सैयद अहमद खान द कॉजेज ऑफ़ इंडियन रिवोल्ट ट्रांसलेटेड* इंग्लिश वाई हिज टू इंग्लिश फ्रेंड्स बनारस, 1873। सर सैयद अहमद खान द लोयालर मोहमडस ऑफ इंडिया मेरठ 1807 पार्ट फर्स्ट – पृ०सं० 271–274
11. वही, पृ०सं० 149–201।


## Annexure-A

### के०के० दत्त द्वारा लिखित मौलिक पुस्तकों की सूची :–

1. 'माडर्न इण्डियन हिस्ट्र', डा० सुविमल चन्द्र सरकार के साथ लिखित, इण्डियन प्रेस लि०, इलाहाबाद, 1938
2. 'स्टडीज इन दि हिस्ट्री ऑफ बंगाल सूबा', प्रथम भाग (1740–1770), कलकत्ता विश्वविद्यालय 1936 इस पुस्तक की समीक्षा में प्रोफेसर इवन कॉट्टन तथा एच०जी० रॉलिंसन ने लिखा है कि यह ग्रंथ गुणवत्ता पूर्वक स्त्रोतों से ओतप्रोत तथा वस्तुनिष्ठ अध्ययन का प्रतीक है।
3. 'एजुकेशनल ऐण्ड सोशल एमेलिओरेशन ऑफ वूमेन इन प्री–म्युटिनी इण्डिया', लॉ प्रेस पटना, 1936।
4. 'आलीवर्दी ऐण्ड हिज टाइम्स', कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1939 (संशोधित एवं नवीन संस्करण, वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1963।
5. 'दि संथाल इनसरेक्शन ऑफ : 1855–57', कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1940।
6. 'ऐन ऐडवांस्ड हिस्ट्री ऑफ इन्डिया' (तीन भागों में प्राचीन, मध्यकाल तथा आधुनिक)–डा० रमेशचन्द्र मजुमदार तथा डा० हेमचंद्र राय चौधरी के साथ, मैकमिलन ऐण्ड कम्पनी, कलकत्ता, 1946, (इसका प्रकाशन भारत तथा श्रीलंका के अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में हुआ) इस ग्रंथ का हिन्दी संशोधित संस्करण (1954–1971) डा. योगेन्द्र मिश्र द्वारा सम्पन्न किया गया।
7. 'दि डच इन बंगाल एण्ड बिहार (1740–1825)', पटना विश्वविद्यालय, 1948; मोतीलाल बनारसीदास, 1963
8. 'इंडियाज मार्च टू फ्रीडम', ओरिएन्ट लांगमैनस लि०, 1949।
9. 'सेलेक्शन्स फ्रॉम अनपब्लिश्ड कॉरेसपौण्डेन्सेज ऑफ जज–मैजिस्ट्रेट ऐण्ड जज ऑफ पटना (1770–1857)', गवर्नमेंट ऑफ बिहार, 1954।
10. 'बोयोग्राफी ऑफ कुँअर सिंह ऐण्ड सिंह', गवर्नमेन्ट ऑफ बिहार, 1957।
11. 'हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन बिहार' (तीन भागों में), गवर्नमेन्ट ऑफ बिहार, 1957–58 (इसका हिन्दी अनुवाद बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी 1974–98 द्वारा प्रकाशित) प्रथम भाग (1857–1928), द्वितीय भाग (1928–1914), तृतीय भाग (1942–1947)।
12. 'फोर्ट विलियम–इण्डिया हाउस कौरेसपौण्डेन्स, प्रथम भाग (1704–1756)' गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, 1958।

13. 'स्पीचेज ऐण्ड राइटिंग्स ऑफ महात्मा गांधी रिलेटिंग टू बिहार (1917–1947)', गवर्नमेन्ट ऑफ बिहार, 1906 (संपादित)।
14. ए सर्वे ऑफ सोशल लाइफ ऐण्ड इकॉनामिक कन्डीशंस ऑफ इण्डिया इन दि एटीन्थ सेन्चुरी (1707–1803), फर्मा के०एल० मुखोपोध्याय, कलकत्ता, 1961।
15. 'सम फर्मान्स, सनद्स ऐण्ड परवानाज (1578–1802), बिहार', 1962, द्वितीय संस्करण, फर्मा के०एल० मुखोपाध्याय, कलकत्ता, 1964।
16. ए सर्वे ऑफ रिसेन्ट स्टडीज ऑन मार्डन इण्डियन हिस्ट्री, प्रथम संस्करण 1957, द्वितीय संस्करण, 1964, फर्मा के०एल० मुखोपाध्याय।
17. 'डौन ऑफ रिनैस्सेन्ट इंडिया', एलायड पब्लिशर्स लि०, नई दिल्ली, 1965 दूसरा संस्करण (प्र. सं. 1950)।
18. 'रेनेसाँ, नेशनलिज्म ऐण्ड सोशल चेन्जेज इन नॉदर्न इण्डिया,' बुकलैण्ड लि० कलकत्ता, 1965।
19. 'शाह आलम ऐण्ड ईस्ट इण्डिया कम्पनी', वर्ल्ड प्रेस प्रा० लि०, कलकत्ता, 1965।
20. 'पटना कमीशनर्स रेकॉड्स सिरीज', भाग प्रथम, सं० डा० कालि किंकर दत्त, गवर्नमेन्ट ऑफ बिहार, 1965।
21. 'रिलेक्शन ऑन म्युटिनी', कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1966।
22. 'सेलेक्शन्स दि जुडिशियल रेकॉर्डस ऑफ दि भागलपुर डिस्ट्रिक्ट्स ऑफिस (1792–1805)', सं० डा० कालि किंकर दत्त, गवर्नमेन्ट ऑफ बिहार, 1968।
23. 'बायोग्राफी ऑफ डा० राजेन्द्र प्रसाद', गवर्नमेन्ट ऑफ बिहार, 1970।
24. 'गांधीजी इन बिहार', गवर्नमेन्ट ऑफ बिहार, 1970।
25. 'माडर्न इण्डिया ऐण्ड वर्ल्ड फेलोशिप', मैकमिलन ऐण्ड कम्पनी लि० कलकत्ता, 1970 (कलकत्ता विश्वविद्यालय में 'कमला व्याख्यानमाला श्रृंखला' 1969)।
26. 'ऐन्टी ब्रिटिश प्लॉट्स ऐण्ड मुवमेन्ट्स बिफोर 1857', मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, 1970।
27. 'लाइफ ऐण्ड थॉट ऑफ दि पिपुल ऑफ बिहार', साइंटिफिक बुक एजेन्सी, कलकत्ता, 1957 (बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी से प्रकाशित हिन्दी अनुवाद, 1970)।
28. 'सिराजुद्दौला', ओरिएन्ट लांगमैन लि०, कलकत्ता, 1971।
29. 'अनपब्लिश्ड जमीन्दारी रेकॉर्ड्स' (दो भागों में), इण्डियन काउन्सिल ऑफ हिस्टोरिकल रीसर्च, नई दिल्ली, 1975।
30. 'ए सोशल हिस्ट्री ऑफ माडर्न इण्डिया', मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया, कलकत्ता, 1975।